विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ, लक्खीसराय

वर्ग-नवम

विषय-हिन्दी

।। अभ्यास सामग्री ।।

4. अलंकार

1. जहाँ स्वरों की भिन्नता होते हुए भी एक ही वर्ण की आवृत्ति होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।
2. 'उस काल मारे क्रोध के तन काँपने उनका लगा।
   मानो हवा के ज़ोर से सोता हुआ सागर जगा ॥'
3. 'मधुबन की छाती देखो, सूखी इसकी कितनी कलियाँ।'
4. 'लो यह लतिका भी भर लाई,
   मधु मुकुल नवल रस गागरी।'
5. 'भजन कह्यौ ताते भज्यौ, भज्यौ न एको बार।
   दूरि भजन जाते कह्यौ, सो तू भज्यौ गँवार ॥'
6. 'अपलक नभ नील नयन विशाल।'
7. 'संसार की समर स्थली में धीरता धारण करो।'
8. 'कोटि कुलिस-सम वचन तुम्हारा।
   व्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा ॥'
9. 'सब गुरुजन को बुरा बतावै,
   अपनी खिचड़ी अलग पकावै,
   भीतर तत्व न झूठी तेजी,
   क्यों सखि साजन, नहि अंग्रेज़ी।'
   यहाँ 'साजन' के स्थान पर 'प्रियतम' और 'अंग्रेज़ी' के स्थान पर 'फिरंगी' शब्द रख देने पर भी अर्थ में कोई अंतर नहीं आता। अतः या
   अर्थ श्लेष अलंकार है।

0. 'काम-सा रूप, प्रताप दिनेश-सा
   सोम-सा शील है राम महीप का।'
   राम 'उपमेय' है, जबकि काम, दिनेश और सोम 'उपमान' है।

. जहाँ जड़ प्रकृति पर मानवीय भावनाओं तथा क्रियाओं का आरोपण हो, वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है; जैसे–
'बीती विभावरी जाग रही।
अंबर पनघट में डुबो रही तारा घट उषा नागरी।'